बर्कले

अनुभववादी दार्शनिक बर्कले का दर्शन : अनुभववाद के प्रमाणवाद / लॉक के प्राथमिक गुण एवं गौणगुण के खण्डन से प्रारंभ होता है।

लॉक अनुभववाद — बर्कले अनुभववाद
लॉक इन्द्रियानुभववाद — विज्ञानानुभववाद
जड़वाद का समर्थन — जड़वाद का खण्डन / अध्यात्मवाद की स्थापना

	अचित (जड़)	चित (आत्मा)	ईश्वर	
★				— लॉक
★	X	✓	✓	बर्कले
★	X	?	X	ह्यूम

अमूर्त प्रत्यय — इसकी चर्चा सर्वप्रथम सुकरात के दर्शन में, जातिसिद्धांत के रूप में।
लॉक - लॉक के दर्शन में अमूर्त प्रत्यय स्वीकार्य

बर्कले अमूर्त प्रत्यय का खण्डन करते हैं। बर्कले का कहना है कि अमूर्त विचारों (जाति विचारों) का विरोध किये बिना हम जड़ वस्तु की सत्ता का निराकरण नहीं कर सकते, क्योंकि अमूर्त विचार ही जड़ की सत्ता के आधार हैं।

★ दृष्टि-सृष्टिवाद (Esse Est Percipi)
"सत्ता अनुभवमूलक है।"
"मैं वस्तुओं को विचार नहीं बनाता, मैं विचारों को वस्तु बना रहा हूँ"
विचार ही एक विषय है और उसकी सत्ता आत्मा के भीतर होती है।
आत्मा का अर्थ :
जीवात्मा और परमात्मा दोनों हैं।
दृष्टि-सृष्टिवाद का
↓
अंत → अहंमात्रतावाद / अहंवादी (Solipsist) में।

अहंवाद से बचने के लिए 'ईश्वर' की स्थापना

डेविड ह्यूम (David Hume)

ग्रन्थ (सन्) — मानव स्वभाव पर निबंध
(Treatise of Human Nature)

लॉक + बर्कले + ह्यूम — अनुभववादी

ज्ञानमीमांसा

ह्यूम के अनुसार ज्ञान के दो साधन हैं —
(1) प्रत्यय (Idea)
(2) संस्कार (Impression)

बर्कले →	ईश्वर	जीव	जगत	
				लॉक
	✓	✓	✗	बर्कले
	✗	✗	✗	ह्यूम

ह्यूम का कथन है - "लॉक के हाथों पड़कर दर्शन तत्वमीमांसा से अधिक ज्ञानमीमांसा बन गया था।"

→ ह्यूम के अनुसार ज्ञान इन्द्रियानुभव पर आधारित है, इस प्रकार ह्यूम प्रत्ययवादी अधिक दिखते हैं और अंत में इनके दर्शन का अंत - संदेहवाद और अज्ञेयवाद में होता है।

(1) प्रत्यय (Idea) या विज्ञान को ह्यूम के आलावे लॉक और बर्कले दोनों स्वीकारते हैं। ह्यूम भी मानते हैं कि प्रत्यय / विज्ञान दो प्रकार के होते हैं —
(i) सरल
(ii) मिश्रित

(2) संस्कार (Impression) इसका प्रयोग सर्वप्रथम ह्यूम ने किया है। संवेदना और स्वसंवेदना को ही ह्यूम संस्कार कहते हैं। इन्द्रियाँ दो हैं - बाह्य तथा आन्तरिक, बाह्य इन्द्रियाँ पाँच हैं और इनसे रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द का ज्ञान होता है। आन्तरिक इन्द्रियां केवल मन है जिनसे सुख, दुःख आदि का ज्ञान होता है। इन दोनों का सम्मिलित